

सौवीर अभिऊ. *कलाई, [सुरमो, एक खनिजद्रव्य]

सौह, सौहु चंद्रवा. सहु

स्कल- नलरा. खसी पडवुं, पडी जवुं (सं. खल)

स्कंद आनंस्त. स्कंध, [समुदाय, वर्ग]

स्कंधावार कादं(शा). नलाख्या. छावणी (सं.)

स्खलित थई *प्रेमाका. [कामावेगजन्य स्खलन थयुं]

स्तकी प्राचीका. थकी, [-थी] (प्रा.थक्किअ परथी)

स्तविवा उक्तिर. स्तववा, स्तुति करवा

स्तंभ-पूतली न्याय अखाका. थांभलो एक होय पण पूतली अनेक, एवी रीते अनेकतामां एकता

स्तुप ऐतिका. स्तूप, धूभ, [स्मरणस्तंभ]

स्त्रीण गुर्जरा. स्त्रैण, बायलो

स्त्रीमि कादं(शा). *स्त्रीओथी भरेलुं, [स्त्री-ओ वडे रचायुं होय एवुं] (सं.स्त्रीमय)

स्त्रीरजि विक्रच. स्त्रीराज्यमां

स्त्रीराज्य नलरा. एक प्रदेश ज्यां नलराजाए विजय कर्यो हलो (सं.)

स्थकी दशस्कं(१). -थी, [वडे]

स्थविर आरारा. वृद्ध (सं.)

स्थित्य अखाका. स्थिति

स्थिर चित्तसं. स्थावर, [अगतिशील पदार्थ]

स्थूलपणुं चित्तसं. मोटापणुं, प्रौढत्व

स्नात कादं(धु). स्नान

स्नेह चित्तसं. तेल [सं.]

स्फटिक *अखाका. [स्फटिकमणि]; प्रेमप. काच [सं.]

स्मर अखाका. कामदेव [सं.]

स्मरणी मोसाच. माळा [सं.]

स्मरिवा उक्तिर. स्मरवा, स्मरण करवा

स्मृति प्रबोप्र. संमति, [समर्थन]

स्यउं आनंस्त. गुर्जरा. नेमिछं. वसंफा(ल). शुं (सं.कीदृशकम्); वसंवि(ब्रा). शा माटे

स्यउं आरारा. गुर्जरा. लावल. वसंफा. वसंवि(ब्रा). साथे (सं.सम्म); वीसरा. साथे, वडे, [प्रत्ये]; जुओ श्यं

स्यंध कृष्णच. सिंह

स्याथो चित्तसं. शामांथी

स्यादुवाद आनंस्त. अनेकांतवाद, वस्तुनां अनेकविध पासां - धर्मोना स्वीकारनो वाद

स्यामी नलरा. प्रभु, स्वामी

स्याल उक्तिर. पंचवा. शियाळ (सं.शृगाल)

स्युं *ऐतिका. [शुं, केवुं] [सं.कीदृशकम्]

स्तोक मदमो. शलोको, गौरवगाथा (सं. श्लोक)

स्वअंबर मदमो. स्वयंवर

स्वदइ वसंवि. वसंवि(ब्रा). स्वाद आवे, रुचे (सं.स्वदति)

स्वयंवर कादं(धु). गांधर्वविवाह, [स्वजनो-नी संमति के सहायनी अपेक्षा वगर केवल वरकन्यानी परस्परनी प्रीतिथी यतां लग्न] [सं.]

स्वरमंडल नेमिछं. एक प्रकारनी वीणा [सं.]